

आत्मनिवेदन पुं. (तत्.) [आत्म+निवेदन] 1. अपना सर्वस्व अपने इष्ट देव को समर्पित करना, आत्मसमर्पण 2. अपने संबंध में किया गया निवेदन।

आत्मनिवेदनासक्ति स्त्री. (तत्.) [आत्म+निवेदन +आसक्ति] अपने अवगुणों और दोषों का वर्णन करते हुए, प्रभु के प्रति पूर्ण समर्पण की भक्ति।

आत्मनिषेधा पुं. (तत्.) [आत्म+निषेध] अध्यात्म में ऊँचे लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं का त्याग, अहंकार का निषेध, (पाश्चात्य दर्शन)।

आत्मनिष्ठा वि. (तत्.) 1. आत्मा में निष्ठा रखने वाला, आत्मविद्या का साधक 2. अपना ही हित-चिंतक।

आत्मनिष्ठा स्त्री. (तत्.) [आत्म+निष्ठा] अपने ऊपर पूर्ण निष्ठा भाव, आत्मविश्वास स्वाभाविक ज्ञान अर्जन से उत्पन्न विश्वास।

आत्मनीन वि. (तत्.) 1. जो अपना हो, जिस पर अपना अधिकार हो 2. स्वयं से संबंध रखने वाला, अपना, निज का 3. आत्महितकारी।

आत्मनीय पुं. (तत्.) 1. पुत्र 2. साला।

आत्मनेपद पुं. (तत्.) संस्कृत के दो प्रकार के क्रियारूपों (परस्मैपद तथा आत्मनेपद) में से दूसरे प्रकार के अर्थात् आत्मवाची क्रियारूप।

आत्मन् पुं. (तत्.) 1. आत्मा 2. जीव 3. स्व, आत्म 4. सार 5. प्रकृति।

आत्मपद पुं. (तत्.) [आत्म+पद] सांसारिक मायाजाल से मुक्ति, मोक्ष।

आत्मपरीक्षण पुं. (तत्.) [आत्म+परीक्षण] अपने गुण-अवगुण पहचान पर परखना, आत्मनिरीक्षण, अपनी आलोचना।

आत्मपीड़न पुं. (तत्.) [आत्म+पीड़न] अपने आप को मानसिक अथवा शारीरिक कष्ट देकर सुखी रहने का भाव।

आत्मप्रकाश पुं. (तत्.) [आत्म+प्रकाश] 1. अंतर मन का प्रकाश अथवा ज्ञान, उत्कृष्ट कार्य के

लिए आत्मा अथवा परमात्मा की प्रेरणा 2. भाव और विचारों की अभिव्यक्ति।

आत्मप्रदर्शन पुं. (तत्.) [आत्म+प्रदर्शन] 1. ज्ञान-बल, धन-बल आदि का प्रदर्शन अथवा दिखावा 2. स्वयं को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाना।

आत्मप्रशंसा स्त्री. (तत्.) अपने मुँह से अपनी बड़ाई, स्वयं का स्तुतिगान।

आत्मप्रेक्षण पुं. (तत्.) [आत्म+प्रेक्षण] अपनी अक्षमताओं का सूक्ष्म परीक्षण, अपने दोषों का सूक्ष्म अवलोकन।

आत्मप्रेरणा स्त्री. (तत्.) आंतरिक प्रेरणा।

आत्मबल पुं. (तत्.) [आत्म+बल] 1. विकट परिस्थितियों में भी संयत रहने की शक्ति, आत्मा की शक्ति 2. भीतर का बल।

आत्मबलिदान पुं. (तत्.) [आत्म+बलिदान] कार्य सिद्धि के लिए अपने आप की बलि चढ़ाना, आत्माहुति, आत्मोत्सर्ग।

आत्मबोध पुं. (तत्.) [आत्म+बोध] आत्मज्ञान, आत्मा की जानकारी, आत्मा की पहचान।

आत्मभाव पुं. (तत्.) [आत्म+भाव] 1. आत्मा का स्वरूप 2. आत्मा का भाव 3. अपनेपन का भाव 4. हर प्राणी के प्रति आत्मिक दृष्टि।

आत्मभीति स्त्री. (तत्.) [आत्म+भीति] मनो. अपने से लगने वाले भय की प्रतीति, अकेले में लगने वाले भय का आभास।

आत्मभू पुं. (तत्.) [आत्म+भू] 1. अपने शरीर से उत्पन्न, आत्मज 2. स्वयं उत्पन्न, स्वयंभू पुं. 1. पुत्र, बेटा 2. कामदेव 3. ब्रह्मा 4. विष्णु 5. शिव।

आत्मभ्रॉति स्त्री. (तत्.) [आत्म+भ्रॉति] भ्रम या भय के कारण अनात्म को भी आत्म समझना।

आत्ममंथन पुं. (तत्.) [आत्म+मंथन] 1. अपने भावों का विवेचन और विश्लेषण 2. अपने विचारों का मंथन 3. मन ही मन का गंभीर चिंतन।

आत्ममुग्ध वि. (तत्.) [आत्म+मुग्ध] अपने ऊपर सम्मोहित व्यक्ति, स्वयं भ्रमित।